This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक .....

1144

B.A. (Hons.) बी.ए. (ऑनर्स) / II B

HINDI – Paper IV

हिन्दी – प्रश्न-पत्र IV

(हिन्दी गद्य साहित्य)

(प्रवेश-वर्ष 2000 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे | पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी । इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी मानो झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गयी थी । काना कहने से काने को दुःख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है ?

अथवा

जिसे तुम प्रेम कहती हो, वह धोखा है, उद्दीप्त लालसा का विकृत रूप, उसी तरह जैसे संन्यास केवल भीख माँगने का संस्कृत रूप है । वह प्रेम अगर वैवाहिक जीवन में कम है, तो मुक्त विलास में बिल्कुल नहीं है । सच्चा आनन्द, सच्ची शान्ति केवल सेवा व्रत में है । सेवा ही वह सीमेण्ट है, जो दम्पती को जीवनपर्यन्त स्नेह और साहचर्य में जोड़े रख सकता है, जिस पर बड़े-बड़े आघातों का कोई असर नहीं होता । 7

(ख) अन्न पैदा करना तथा हाथ की कारीगरी और मेहनत से जड़ पदार्थों को चैतन्य-चिह्न से सुसज्जित करना, क्षुद्र पदार्थों को अमूल्य पदार्थों में बदल देना इत्यादि कौशल ब्रह्मरूप होकर धन और ऐश्वर्य की सृष्टि करते हैं । कविता, फकीरी और साधुता के ये दिव्य कला कौशल जीते-जागते और हिलते-डुलते प्रतिरूप हैं । इनकी कृपा से मनुष्य जाति का कल्याण होता है ।

अथवा

घृणा का भाव मनुष्य की असमर्थता का प्रमाण है । जिसे तोड़कर हम इच्छानुसार गढ़ सकते हैं, उसके प्रति घृणा का अवकाश ही नहीं रहता, पर जिससे अपनी रक्षा के लिए हम सतर्क हैं, उसी की स्थिति हमारी घृणा का केन्द्र बन जाती है । जो मदिरा के पात्र को तोड़कर फेंक सकता है, उसे मदिरा से घृणा की आवश्यकता ही क्या है ? पर जो उसे सामने रखने के लिए भी विवश है और अपने मन में उससे बचने की शक्ति भी संचित करना चाहता है वह उसके दोषों की एक-एक ईंट जोड़कर उस पर घृणा का काला रंग फेरकर एक दीवार खड़ी कर लेता है । 7

(ग) उसके पास न्याय का बल है और नीति की शक्ति । एक ओर मिट्टी है, दूसरी ओर लौहा, जो इस वक्त अपने को फौलाद कह रहा है । वह अजेय है, घातक है । अगर कोई शेर आ जाए, तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जाएँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बन्दूक छोड़कर भागें, वकील साहब की नानी मर जाए, चुगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जाएँ । मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रूस्तमे-हिन्द लपक कर शेर की गरदन पर सवार हो जाएगा और उसकी आँखें निकाल लेगा ।

अथवा

रात एक पहर बीत चली, पर मधूलिका अपनी झोंपड़ी तक न पहुँची । वह उधेड़-बुन में विक्षिप्त-सी चली जा रही थी । उसकी आँखों के सामने कभी सिंहमित्र और कभी अरुण की मूर्ति अन्धकार में चित्रित हो जाती । उसे सामने आलोक दिखाई पड़ा । वह बीच पथ में खड़ी हो गई । प्राय: एक सौ उल्का-धारी अश्वारोही चले आ रहे थे । और आगे-आगे एक अधेड़ वीर सैनिक था । उसके बायें हाथ में अश्व की वल्गा और दाहिने हाथ में नग्न खड्ग । अत्यन्त धीरता से वह टुकड़ी अपने पथ पर चल रही थी । 7

2. 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' के केन्द्रीय विचार का विश्लेषण कीजिए ।

अथवा

'अशोक के फूल' निबन्ध के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबन्ध-शैली पर विचार कीजिये । 15

3. "मलबे का मालिक' कहानी विभाजन की त्रासदी का संवेदनात्मक चित्रण है ।" – स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

कहानी कला की दृष्टि से 'लंदन की एक रात' कहानी की समीक्षा कीजिए । **15**

4. "गोदान भारतीय किसान की संघर्ष-गाथा है ।" इस कथन पर विचार कीजिए ।

अथवा

गोदान में अभिव्यक्त प्रेमचन्द की नारी दृष्टि पर विचार कीजिए । **15**

5. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) रेखाचित्र की दृष्टि से रज़िया

(ख) आत्म-कथा की दृष्टि से 'अपनी खबर'

(ग) पुरस्कार कहानी में प्रेम का स्वरूप **9**